Amire Ahle Sunnat Se Mahabbate Rasool Ke Baare Me 14 Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 370
Weekly Booklet : 370

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी के मल्फ़ूज़ात का महकता गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से
मह़ब्बते रसूल
के बारे में 14 सुवाल जवाब

सफ़ह़ात 16

- जिस का दिल ज़िक्रे नबी में मुश्तग़िल न हो वोह क्या करे ? 04
- केक पर नालैने पाक या मुक़द्दस नाम लिख कर छुरी से काटना कैसा ? 06
- इश्क़े रसूल के साथ जीने का क्या मतलब है ? 08
- गुस्ताख़े रसूल पर मुश्तमिल वीडियो देखना और आगे भेजना कैसा ? 13

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अमीरे अहले सुन्नत से महब्बते रसूल के बारे में 14 सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला : **''अमीरे अहले सुन्नत से महब्बते रसूल के बारे में 14 सुवाल जवाब''** पढ़ या सुन ले उसे महब्बते रसूल में तड़पने वाला दिल और इश्क़े नबी में आंसू बहाने वाली आंखें अ़ता फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मोमिन जुमुआ़ की रात दो रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द 25 मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े, फिर येह दुरूदे पाक ''صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ'' हज़ार मरतबा पढ़े तो आने वाले जुमुआ़ से पहले ख़्वाब में मेरी ज़ियारत करेगा और जिस ने मेरी ज़ियारत की, **अल्लाह** पाक उस के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा। (القول البدیع، ص383)

मुन्दरिजए बाला दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन एक हज़ार बार येह दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो वोह सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत करेगा या जन्नत में अपनी मन्ज़िल देख लेगा। अगर पहली बार में मक़्सद पूरा न हो तो दूसरे जुमुआ़ भी इस को पढ़ ले, اِنْ شَآءَاللّٰه पांच जुमुओं तक इस को सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो जाएगी। (तारीख़े मदीना, स. 343)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कितनी महब्बत करनी चाहिये ?

जवाब : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने मां बाप, आल औलाद और हर प्यारी चीज़ से बढ़ कर महब्बत करना ज़रूरी है।[1] हर जुमुआ़ को आप ख़ुत्बाते रज़विय्या में सुनते होंगे اَلَا لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ या'नी ख़बरदार ! उस का ईमान नहीं जिस को सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत नहीं।

(ख़ुत्बाते रज़विय्या, स. 6, दलाइलुल ख़ैरात, स. 47)

महब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/419)

सुवाल : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के इ़श्क़े रसूल के बारे में कुछ बयान फ़रमा दीजिये।[2]

जवाब : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का इ़श्क़े रसूल भी बे मिसाल था।

---

1 ... रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ या'नी तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उस के बाप, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं। (بخاری، 1/17، حدیث:15) इस ह़दीसे पाक के तह़्त शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मोमिने कामिल के ईमान की निशानी येह है कि मोमिन के नज़्दीक रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम चीज़ों और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब व मुअ़ज़्ज़म हों, इस ह़दीस में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ियादा महबूब होने का मत़लब येह है कि हुक़ूक़ की अदाएगी में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऊंचा माने इस त़रह़ कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लाए हुए दीन को तस्लीम करे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की पैरवी करे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व अदब बजा लाए और हर शख़्स और हर चीज़ या'नी अपनी ज़ात, अपनी औलाद, अपने मां बाप, अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और अपने मालो अस्बाब पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशी को मुक़द्दम रखे, जिस के मा'ना येह हैं कि अपनी हर प्यारी चीज़ यहां तक कि अपनी जान के चले जाने पर भी राज़ी रहे लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ को दबता हुवा गवारा न करे। (اشعۃ اللمعات، 1/50 ملخصاً)

2 ... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत ने क़ाइम किया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ही अ़त़ा किया हुवा है।

अगर किसी को थोड़ी बहुत समझ पड़ती हो तो वोह आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ना'तिया कलाम "ह़दाइक़े बख़्शिश" को थोड़ा थोड़ा रटना शुरूअ़ कर दे, اِنْ شَآءَاللّٰه बहुत बड़ा आ़शिक़े रसूल बन जाएगा। जिस शै को सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत ह़ासिल है आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उस शै का अदब फ़रमाते, यहां तक कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मदीनए मुनव्वरह के कुत्ते का भी अदब फ़रमाया करते और इस ह़वाले से आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़दाइक़े बख़्शिश में अश्आ़र भी लिखे हैं, चुनान्चे एक मक़ाम पर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

रज़ा किसी सगे त़यबा के पाउं भी चूमे तुम और आह कि इतना दिमाग़ ले के चले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 371)

इस शे'र में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने आप को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि "ऐ रज़ा ! कभी तू ने मदीने के कुत्ते के पाउं भी चूमे हैं ? तुझे इतनी समझ नहीं कि मदीने के कुत्ते के पाउं चूमे जाते हैं।" बा'ज़ अ़क़्ल मन्दों की समझ में ऐसे अश्आ़र नहीं आते जिस के बाइ़स वोह तन्क़ीद करने लगते हैं। येह नसीब की बात है कि कोई तन्क़ीद करता है और कोई **अल्लाह** पाक के वलियों के पीछे चल कर अपने लिये जन्नत का सामान करता है। जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मदीने के कुत्तों का इतना अदब करते हैं तो मदीने के साथ निस्बत रखने वाले दीगर जानवरों का कितना अदब करते होंगे ! फिर जो मदीने वाले से निस्बत रखते हैं जैसे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم, अहले बैते अत़्हार और सादाते किराम इन का कितना अदबो एह़तिराम करते होंगे। आ़म लोग सादाते किराम का कितना अदब करते हैं येह मुझे पता है और आप को भी इस का तजरिबा होगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه !

दा'वते इस्लामी वाले सादाते किराम का बड़ा अदब करते हैं और येह सारा अदब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़ैज़ान से तक़्सीम हुवा है।

मुस्त़फ़ा का वोह लाडला प्यारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
ग़ौसे आ'ज़म की आंख का तारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
सुन्नियों के दिलों में जिस ने थी शम्ए इश्क़े रसूल रोशन की
वोह ह़बीबे ख़ुदा का दीवाना वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/303)

सुवाल : जिस को मदीने जाने की तड़प न हो और न ही उस का दिल हिज्रे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ग़मगीन होता हो तो वोह क्या करे ?

जवाब : जिस को सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इश्क़ में रोना न आता हो, ग़म की कैफ़िय्यत पैदा न होती हो तो वोह ब कोशिश रोने जैसी शक्ल बनाए कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी है मगर येह रोना रियाकारी के लिये न हो। जो आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे ग़म में, ग़मे उम्मत में आंसू बहाते रहे, हमें याद फ़रमाते रहे, जब दुन्या में तशरीफ़ लाए पैदा होते ही رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِيْ[1] (या'नी ऐ **अल्लाह** ! मेरी उम्मत मुझे बख़्श दे, मुझे दे दे, मुझे हिबा कर दे) जिन के लबों पर था। उस आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज में भी उम्मत को याद किया। (سرور القلوب بذکر المحبوب، ص95) जब क़ब्रे अन्वर में तशरीफ़ ले गए तब भी होंट मुबारक हिल रहे थे, कान क़रीब कर के सुना गया तो اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ (या'नी मेरी उम्मत मेरी उम्मत) फ़रमा रहे थे।[2] आज भी اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ फ़रमा रहे हैं। (کنز العمال، جز:14، 7/178، حدیث:39108) बा'ज़ अवक़ात बन्दे के कान बजते हैं

1... फ़तावा रज़विय्या, 30/712

2... مدارج النبوت، 2/442

तो उस वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने लिखा है कि येह सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के اُمَّتِی اُمَّتِی फ़रमाने की आवाज़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 30/712) बसा अवक़ात येह आवाज़ जिस को रब चाहता है उस को सुनाई देती है, इस की एक अ़लामत येह होती है कि उस के कान बजते हैं लिहाज़ा उस वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए। जो आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें इतना याद फ़रमाएं, मीज़ाने अ़मल पर अपने गुनाहगार उम्मतियों की नेकियों के पलड़े को भारी बनाएं और जब पुल सिरात से गुलाम गुज़रें तो उस वक़्त सज्दे में जा कर "رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ या'नी ऐ परवर्दगार ! मेरी उम्मत को सलामती से गुज़ार" की दुआ़एं दें। (ترمذی، 4/195، حدیث:2441 بتغیر قلیل) और शफ़ाअ़त फ़रमाएं अब ऐसे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत दिल में क्यूं न पैदा होगी। इस त़रह़ इन बातों को और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रोने को याद करें, اِنْ شَآءَاللہ दिल में इ़श्क़ की कैफ़िय्यात पैदा होंगी और रोने की भी कैफ़िय्यत बन सकेगी, जैसा कि मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का दिल पर चोट करने वाला येह शे'र है :

हाए फिर ख़न्दए बे जा मेरे लब पर आया हाए फिर भूल गया रातों का रोना तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 25)

ख़न्दए बे जा मा'ना फ़ुज़ूल हंसी, लब मा'ना होंट या'नी मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने आप को मुख़ात़ब कर के फ़रमा रहे हैं : "अफ़्सोस ! मेरी फ़ुज़ूल हंसी निकल गई, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप हम उम्मतियों के लिये रातों को जो रोते रहे मैं वोह भूल गया, ग़फ़्लत का शिकार हो गया कि मैं फ़ुज़ूल हंस रहा हूं।" येह भी याद करने का एक अन्दाज़ है। इस के इ़लावा आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में बैठें, 72 नेक

आ'माल पर अ़मल करें और आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰہ इश्क़े रसूल में रोने वाली ख़ूबी नसीब हो ही जाएगी। **अल्लाह** पाक हम सब को प्यारे महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद में रोने वाली आंखें अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

याद नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर   मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

(ज़ौक़े ना'त, स. 144)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/385)

सुवाल : मैं एक बेकरी में काम करता था, वहां पर 12 रबीउ़ल अव्वल के महीने में ना'लैने मुबारक के केक बनाए जाते थे, बा'ज़ केकों के ऊपर "**अल्लाह**" या "मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" नाम लिखा जाता था। लोग उन केकों को घर ले जा कर छुरी से काट देते थे। मेरा सुवाल येह है कि ऐसा करना ठीक है या ग़लत़ ? नीज़ नाम लिखने वालों को भी गुनाह हो सकता है या नहीं ?

जवाब : केक पर लिखने के तअ़ल्लुक़ से कई बार आ़शिक़ाने रसूल को समझाया है। बहुत से लोग अब ऐसा नहीं करते और जो अब भी ऐसा करते हैं तो उन्हें समझना चाहिये कि जिस प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम चूमते हैं, फ़्रेम करवा कर लगाते हैं, उन के नाम पर जान क़ुरबान करते हैं और फिर उसी मुक़द्दस नाम को केक पर लिखवा कर हाथ में छुरी पकड़ लेते हैं। आप के इश्क़ को क्या हो गया है ? सोचें तो सही आप क्या करने लगे हैं ? मुझे तो येह बोलते हुए भी मज़ा नहीं आ रहा कि मैं अल्फ़ाज़ में इसे बयान करूं। फिर येह कि ना'ले पाक जो हम सर पर लगाते हैं और तमन्ना करते हैं :

जो सर पे रखने को मिल जाए ना'ले पाके हुज़ूर तो फिर कहेंगे कि हां ताजदार हम भी हैं

(ज़ौक़े ना'त, स. 188)

नक़्शे ना'ले पाक की अ़ज़मत पे क़ुरबान ! आ़शिक़ाने रसूल ख़ूब समझ सकते हैं कि ना'ले पाक की कितनी शानो अ़ज़मत है लेकिन फिर न जाने बा'ज़ को क्या हो जाता है कि इसे केक पर बना कर हाथ में छुरी पकड़ लेते हैं। ऐसा करना बे अदबी है लिहाज़ा इस बे अदबी से बचना चाहिये कि बा अदब बा नसीब।[1] (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/399)

सुवाल : दा'वते इस्लामी के चेनल पर आप के मक्कतुल मुकर्रमा और मदीनतुल मुनव्वरह की ह़ाज़िरी के मनाज़िर तो हम ने देखे हैं मगर मुवाजहा शरीफ़ पर आप की ह़ाज़िरी के मनाज़िर नहीं देखे, इस ह़वाले से कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : काफ़ी साल हुए मैं ने मुवाजहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी नहीं दी क्यूं कि मैं ने अपने आप को इस क़ाबिल नहीं समझा कि मैं रूबरू ह़ाज़िर हो जाऊं तो यूं हर एक का अपना अपना ज़ौक़ होता है।

मुवाजहा शरीफ़ पर ह़ाज़िरी न देने वाले बुज़ुर्ग

मश्हूर सुन्नी आ़लिमे दीन और आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ नबहानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जो कि सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दौर के बुज़ुर्ग हैं, इन के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद शरीफ़ कोटलवी

1... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (खाने की किसी चीज़ पर) ग़ैर जानदार की तस्वीर बनानी अगर्चे जाइज़ है मगर दीनी मुअ़ज़्ज़म चीज़ मिस्ल मस्जिदे जामेअ़ वग़ैरा की तस्वीरों में उन्हें तोड़ना और खाना ख़िलाफ़े अदब होगा और वोही बुरी निस्बत भी लाज़िम आएगी कि फ़ुलां शख़्स ने मस्जिद तोड़ी, मस्जिद को खा लिया कि अहले उ़र्फ़ तस्वीर को अस्ल ही के नाम से याद करते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 24/560 ब तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर)

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ के दरवाज़े बाबुस्सलाम पर एक नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग को देखता था, एक बार मैं ने उन बुज़ुर्ग से मुलाक़ात की और अपना तआ़रुफ़ करवा कर पूछा : आप सिर्फ़ यहां नज़र आते हैं, मैं ने आप को मुवाजहा शरीफ़ पर जाते कभी नहीं देखा। उन्हों ने फ़रमाया : येह सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का करम है कि मुझे अपने दरवाज़े तक आने की इजाज़त दी है और मैं दरवाज़े में पहुंच गया हूं, मैं मुवाजहा शरीफ़ पर इस लिये नहीं आता कि कुत्ते का काम घर के दरवाज़े पर पहरा देना होता है, वोह घर के अन्दर नहीं जाता, यूं उन्हों ने इश्क़ भरा जवाब दिया था। (जवाहिरुल बिहार, पेश लफ़्ज़, स. 10, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/233)

सुवाल : येह ख़्वाहिश करना कैसा कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रह़ मेरी उ़म्र 63 साल हो ?

जवाब : बराबरी की ख़्वाहिश न करे, थोड़ी कम की करे। मैं ने भी येह ख़्वाहिश की थी और बारहा इस का इज़्हार भी किया था, लेकिन मैं अब वोह उ़म्र गुज़ार चुका हूं, "जो मालिक की मरज़ी", ख़्वाहिश करने में क्या जाता है! येह इश्क़ो महब्बत की बात है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/181)

सुवाल : इश्क़े रसूल के साथ जीने का क्या मत़लब होता है ?

जवाब : इन्सान को मां बाप से महब्बत होती है और होनी भी चाहिये। इसी त़रह़ औलाद से भी महब्बत होती है जब ही उसे कमा कर खिलाते हैं, ईद के दिन अच्छे अच्छे और क़ीमती कपड़े पहनाते हैं, उस की दवा दारू (या'नी इलाज मुआ़लजा) का इन्तिज़ाम करते हैं, गोया अपना सब कुछ औलाद के लिये क़ुरबान करते हैं। तो **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बाल बच्चों, मां बाप, अपने माल और दुन्या की हर चीज़ से ज़ियादा

महब्बत होनी चाहिये। (بخاری، 1/17، حدیث:15) जब हम अपनी आल औलाद के लिये इतना कुछ करते हैं तो सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश करने के लिये क्या क्या करना चाहिये। महब्बत जब बढ़ती और बहुत ज़ियादा हो जाती है तो उसे इश्क़ कहा जाता है। (احیاء العلوم، 5/29, एहयाउल उलूम (मुतर्जम), 5/68) हमें इश्के़ रसूल में ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये, और इश्के़ रसूल का आ'ला दरजा येही है आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़ और आप के तौर तरीक़े अपनाए जाएं, आप के नक़्शे क़दम और आप की सुन्नतों पर चला जाए, आप के अहकामात पर अमल किया जाए। जैसे आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ का हुक्म दिया तो नमाज़ पढ़ें, रोज़ों का इर्शाद फ़रमाया तो रोज़े रखें, गुनाहों से बचने का फ़रमाया तो गुनाहों से बचते रहें, अच्छे अख़्लाक़ और आ'ला किरदार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। येह सब चीज़ें करने वाला अमलन भी आशिके़ रसूल है। वरना जो गुनाहगार है वोह भी आशिके़ रसूल हो सकता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/182)

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ऊंटनी के नाम के साथ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا लिख सकते हैं ?

जवाब : مَاشَآءَاللّٰه ! बड़ा दिलचस्प सुवाल है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ऊंटनी का नाम "क़स्वा" था। (تفسیر روح البیان، پ14، النحل، تحت الآیۃ:7، 5/8) येह बड़ी आशिके़ रसूल ऊंटनी थी। जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात हुई तो इस ऊंटनी ने चारा खाना छोड़ दिया था, न खाती थी न पानी पीती थी, इसी तरह भूकी प्यासी रह कर इस ने ग़मे मुस्तफ़ा में जान दे दी। (تفسیر روح البیان، پ14، النحل، تحت الآیۃ:7، 5/8، 9 ماخوذاً) जानवर मुकल्लफ़ और शरीअत के पाबन्द नहीं होते, (फ़तावा रज़विय्या, 16/382) न उन्हें गुनाह मिलता

है और न ही सवाब मिलता है। "رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ" दुआ है, इस का मा'ना है : "**अल्लाह** उन से राज़ी हो।" ज़ियादा तर येह जुम्ला सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के साथ बोला जाता है। वली के नाम के साथ बोलने में भी कोई हरज नहीं है, इस सूरत में इस जुम्ले का मा'ना होगा : "**अल्लाह** उन से राज़ी हो।" (फ़तावा रज़विय्या, 23/390) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم अगर्चे जन्नती हैं, लेकिन फिर भी उन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करने में हरज नहीं है, (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 28, अल हश्र, तहूतल आयह : 10, स. 1011) बल्कि क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र है। (सिरातुल जिनान, पारह : 28, अल हश्र, तहूतल आयह : 10, 10/77) जानवरों के साथ "رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ" नहीं बोला जाता। अगर कोई बोलेगा तो लोग उस का मज़ाक़ उड़ाएंगे, हंसेंगे, Confuse (या'नी उलझन का शिकार) होंगे और तअ़ज्जुब करेंगे। ऐसा कोई काम शरीअ़त को पसन्द नहीं जो लोगों में ख़्वाह म ख़्वाह बहूस का मौज़ूअ़ बने। उन बातों से बचना चाहिये जो कानों को बुरी लगें, इस त़रह़ मसाइल खड़े होते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/207)

सुवाल : दिल में इ़श्क़े रसूल कैसे बढ़ाया जा सकता है ?

जवाब : सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना इ़श्क़े रसूल बढ़ाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। मज़ीद येह कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो हम पर एह़सानात किये उन को याद करते रहने से भी महब्बत में इज़ाफ़ा होता है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मत की बख़्शिश के लिये रोया करते थे, (مسلم، ص109، حدیث:499) हालां कि कौन दूसरों के लिये रोता है ! हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने लिये नहीं रोते थे, बल्कि हमारे लिये रोते थे। اِنْ شَآءَاللّٰہ क़ब्र में भी उन का साथ मिलेगा, उन का करम

शामिले हाल रहा तो नज़्अ़ में जल्वा भी दिखाएंगे, यहां तक कि क़ियामत के दिन पुल सिरात से उम्मत गुज़र रही होगी और येह बारगाहे ख़ुदावन्दी में رَبِّ سَلِّمْ! رَبِّ سَلِّمْ! अ़र्ज़ कर रहे होंगे कि **या अल्लाह !** मेरी उम्मत को सलामती से गुज़ार दे। (مسلم، ص106، حدیث:482) जहां आ'माल तोले जा रहे होंगे वहां भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ग़ुलामों की नेकियों का पल्ला भारी बना रहे होंगे, (ترمذی، 4/195، حدیث:2441) वहां भी दुआ़एं हो रही होंगी, इस त़रह़ शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। यूं सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात इतने हैं कि हम गिन ही नहीं सकते, इन एह़सानात को याद करते रहने से भी महब्बत बढ़ती चली जाएगी। बरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक शे'र है :

शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता दिल तुम पे फ़िदा जाने ह़सन तुम पे फ़िदा हो

(ज़ौक़े ना'त, स. 144)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/225)

सुवाल : इस शे'र की वज़ाह़त फ़रमा दें :

जिसे मिल गया ग़मे मुस्त़फ़ा, उसे ज़िन्दगी का मज़ा मिला
कभी सैले अश्क रवां हुवा, कभी आह दिल में दबी रही

जवाब : इस शे'र का मत़लब येह है कि जिसे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ मिल गया उसे ग़मे मुस्त़फ़ा मिल गया गोया उसे ज़िन्दगी का मज़ा मिल गया, क्यूं कि इ़श्क़े रसूल की ज़िन्दगी ही अस्ल ज़िन्दगी है, कभी महब्बते मुस्त़फ़ा में आंखों से आंसू रवाना हो गए और कभी आंसू नहीं निकले लेकिन वोह महब्बत दिल में ही दबी रही। मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ऐ आह ! मेरे दिल की लगी और न बुझती क्यूं तू ने धुवां सीनए सोज़ां से निकाला

(ज़ौक़े ना'त, स. 60)

या'नी आह बाहर निकली तो ठन्डक हो गई, तो ऐ आह ! तू बाहर क्यूं निकली ? अगर बाहर न निकलती तो और भड़क्ती, फिर कहते हैं कि इश्क़ में जलते हुए सीने से तू ने धूआं क्यूं निकाल दिया ! अगर दिल जलता रहता तो इस का अपना लुत्फ़ था। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/25)

सुवाल : इन्सान किस त़रह़ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुह़िब बन सकता है ?

जवाब : जिस से महब्बत बढ़ानी हो उस की ख़ूबियां मा'लूम करें। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़त़ाए इलाही से तमाम ख़ूबियों के जामेअ़ हैं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जितनी ख़ूबियां मा'लूम होंगी उतना इश्क़े रसूल बढ़ता चला जाएगा, लिहाज़ा सीरत का मुत़ालआ़ करें और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीन की ख़ात़िर दी जाने वाली क़ुरबानियों, नीज़ उम्मत पर आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शफ़्क़त के अन्दाज़ की मा'लूमात ह़ासिल करें, اِنْ شَآءَاللّٰه इश्क़े रसूल बढ़ेगा। मज़ीद येह कि दुरूद शरीफ़ की कसरत करें। सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक नुस्ख़ा येह भी बयान फ़रमाया है कि "ख़ुश इल्ह़ान क़ारी से क़ुरआने करीम की तिलावत सुनने से **अल्लाह** पाक की महब्बत बढ़ती है और ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वां से ना'त शरीफ़ सुनने से इश्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होता है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 173) ना'तें भी वोह सुनें जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हों, जैसे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ऐसे आ़शिक़े रसूल हैं कि आप के क़लम से निकला हुवा हर मिस्रअ़, बल्कि हर लफ़्ज़ इश्क़े रसूल में डूबा हुवा होता है, ऐसों का

कलाम सुनने से दिल में इश्क़ बढ़ेगा, यहां तक कि समझ में नहीं भी आएगा तब भी दिल मुत्मइन रहेगा कि इन का कलाम शरीअ़त के मुताबिक़ है, पल्ले पड़े या न पड़े, झूमे जाऊं। येह मैं उन का अन्दाज़ बता रहा हूं जो सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से वाक़िफ़ हैं। आ़म तौ़र पर दूसरों के कलाम में येह बात नहीं होती। बरादरे आ'ला ह़ज़रत, शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه [1] और दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत के लिखे हुए कलाम पढ़ने सुनने से भी اِنْ شَآءَاللّٰه इश्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/102)

सुवाल : गुस्ताख़िये रसूल पर मुश्तमिल वीडियो देखना और आगे भेजना कैसा ?

जवाब : गुस्ताख़िये रसूल पर मुश्तमिल ख़ाकों और वीडियोज़ को न देखना चाहिये न ही दूसरों को भेजना चाहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं ने भी आज तक कभी ऐसी वीडियो न देखी है न देखने की कोशिश की है। ज़रा सोचिये तो सही ! अगर कोई हमारे बाप के कार्टून या नाज़ेबा ख़ाके बनाए तो क्या हम उसे देखना गवारा कर सकते हैं ? हरगिज़ नहीं ! फिर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन पर हमारी नस्लें, हमारे आबाओ अज्दाद सब क़ुरबान ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुस्ताख़ाना ख़ाकों पर मुश्तमिल वीडियो देखना

1... बरादरे आ'ला ह़ज़रत ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ना'तिया कलामों का मज्मूआ़ "ज़ौक़े ना'त" जब कि शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ना'तिया कलामों का मज्मूआ़ "सामाने बख़्शिश" है। मक्तबतुल मदीना ने इन दोनों किताबों को ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ किया है। हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। (शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत)

और दूसरों को भेजना हमारा इश्क़ क्यूंकर गवारा कर सकता है ! हम तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ ही सुनते हैं, ज़रा सी भी कमज़ोर बात सुनने से हमारे कान बहरे हैं, क्यूं कि महबूब की सिर्फ़ ख़ूबियां देखी जाती हैं और हमारे महबूब तो ऐसे हैं जिन में ख़ूबियों के सिवा कुछ है ही नहीं । आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्अ़ है कि धुवां नहीं

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 107)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/373)

सुवाल : जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम आता है तो अंगूठे क्यूं चूमे जाते हैं ?[1]

जवाब : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर अंगूठे चूमना जाइज़ है, इस में कोई हरज नहीं, ख़ुसूसन अज़ान में अंगूठे चूमने की मुख़्तलिफ़ रिवायतें मौजूद हैं,[2] येह ऐसी बात है जिस पर दलील पेश करने की ज़रूरत ही नहीं । जब बच्चे प्यारे लगते हैं तो उन्हें चूम लिया जाता है, क़ुरआन हमें प्यारा लगता है उसे चूम लिया जाता है, यूं ही मां बाप और उ़लमा के हाथ पाउं चूमे जाते हैं, उस वक़्त येह बात ज़ेह्न में नहीं आती कि

1... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत ने क़ाइम किया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ही अ़ता किया हुवा है ।

2... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अज़ान में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी सुना तो अपनी शहादत की उंग्लियों को चूमा और आंखों पर लगाया, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह देखा तो इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मेरे इस प्यारे दोस्त की त़रह़ करे उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल होगी । (المقاصد الحسنة، ص390، حدیث:1021)

इस की क्या दलील है ? प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर अंगूठे चूमने पर शैत़ान वस्वसा डालता है कि इस की क्या दलील है ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस मौज़ूअ़ पर एक रिसाला बनाम ''مُنِيْرُ الْعَيْنِ فِيْ حُكْمِ تَقْبِيْلِ الْاِبْهَامَيْنِ'' लिखा है जिस में अंगूठे चूमने पर कई दलाइल मौजूद हैं, नीज़ ''नमाज़ के अह़काम'' में एक रिसाला बनाम ''फ़ैज़ाने अज़ान'' भी है जिस में अंगूठे चूमने पर कुछ दलाइल मौजूद हैं।

इश्क़ दे झल्ले ई नम्बर ले गए अ़क़्ल मन्दां एवईं उ़म्रां गालियां

या'नी जो इश्क़ शरीअ़त के दाएरे में हो ऐसा इश्क़ करने वाले आगे निकल गए। इस से आज कल के सूफ़ी नुमा मुराद नहीं जो फ़क़ीर बन कर नशा करते हैं और कहते हैं ''हम पहुंचे हुए हैं, हम आ़शिक़ लोग हैं'' ऐसे लोग सिर्फ़ शैत़ान के आ़शिक़ होते हैं, क्यूं कि जो **रसूलुल्लाह** का आ़शिक़ होगा वोह कभी भी शरीअ़त की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं करेगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/399)

सुवाल : फ़ी ज़माना बद क़िस्मती से हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के مَعَاذَاللهِ गुस्ताख़ाना ख़ाके बना कर दुन्या भर के मुसल्मानों के जज़्बात को ठेस पहुंचाई जा रही है ! येह इर्शाद फ़रमाइये कि हम इन ख़ाके बनाने वाले बद बख़्तों का किस त़रह़ बॉयकॉट करें और ऐसा कौन सा अ़मल करें जो हमारी तस्कीन का सामान हो जाए ?

जवाब : मुसल्मान अ़मली त़ौर पर कमज़ोर होते जा रहे हैं और गुस्ताख़ाने रसूल नहीं चाहते कि मुसल्मान अ़मली त़ौर पर मज़बूत़ हों, लिहाज़ा हमें उन का अ़मली बॉयकॉट करना चाहिये, अगर ज़ेह्न बने तो जगह ब जगह

''फ़ैज़ाने इश्क़े रसूल'' के नाम से मसाजिद बनाएं और गुस्ताख़ों को बता दें कि तुम जितनी गुस्ताख़ियां करोगे اِنْ شَآءَاللّٰه हम उतनी ज़ियादा मस्जिदें बनाएंगे और उन्हें आबाद कर के तुम्हारा अ़मली बॉयकॉट करेंगे ! नीज़ अगर हो सके तो आइन्दा जो जामिआ़तुल मदीना क़ाइम हों उन में से बा'ज़ के नाम भी येही रखे जाएं, चूंकि तमाम जामिआ़त के अगर एक ही नाम रखे जाएं तो फ़र्क़ करना दुश्वार होगा, लिहाज़ा मजलिस ने अपनी सवाब दीद के मुताबिक़ बा'ज़ जामिआ़त के येह नाम रखे। उ़मूमन जब इस त़रह़ के दिल ख़राश वाक़िआ़त पेश आते हैं तो मुसल्मान बड़े पुरजोश और ग़ज़बनाक होते हैं, हो सकता है जोश में आ कर मस्जिद बनाने की निय्यत भी कर लें, लेकिन बा'द में शैत़ान के वस्वसों में आ कर या त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने बना कर महरूम रह जाते हैं, लिहाज़ा निय्यत करते ही पैसे अलग कर दें कि येह मस्जिद के हो गए, फिर जब अ़लाक़े में मस्जिद बने तो उस में अपना ह़िस्सा ज़रूर शामिल करें। **अल्लाह** पाक गुस्ताख़ों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए कि वोह गुस्ताख़ी छोड़ कर आ़शिक़े रसूल बन जाएं। याद रहे ! गुस्ताख़े रसूल का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, अगर्चे वोह अपने आप को मुसल्मान कहता हो, क्यूं कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में अदना सी गुस्ताख़ी करने वाला भी काफ़िर व मुरतद है और उस का निकाह़ टूट जाता है। (बहारे शरीअ़त, 2/463, ह़िस्सा : 9) वोह हमेशा जहन्नम में रहेगा, उस की दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/405)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला